

राष्ट्रीय दैनिक बुद्ध का संदेश | अपना शहर सिद्धार्थनगर

ट्रिपल इंजन की सरकार से तेज दौड़ेगा विकास सांसद जगदंबिका पाल ने मांगा वोट

दैनिक बुद्ध का संदेश

दुमरियांगंज, सिद्धार्थनगर ।

दुमरियांगंज सिद्धार्थनगर मंगलवार को रात्रि में नगर

पंचायत क्षेत्र के भरत चौक

बैदोला चौराहे पर भाजपा प्रत्याशी

बीना देवी के समर्थन में जन

आशीर्वाद सभा का आयोजन किया

गया । पूर्व विधायक राघवेंद्र प्रताप

सिंह ने उपस्थित जनमानस को

सम्बोधित करते हुए बताया कि

मोदी योगी के नेतृत्व में

विकास की जो गंगा बही है उसको और

तीव्र गति देने के लिए और

नगर पंचायत के हर गली

मोहल्ला सुंदर स्वच्छ चमकदार

बनाने के लिए भाजपा को बोटकर

भाजपा प्रत्याशी को विजयी

बनाकर ट्रिपल इंजन सरकार

बनाए । इस दौरान लोगों ने भाजपा

को बोट देकर दुमरियांगंज के

विकास का डिब्बा ट्रिपल इंजन

जोड़ने के लिए जनता ने संकल्प

लिया । कार्यक्रम में भाजपा प्रत्याशी

बीना देवी ने कमल के फूल पर

मोहर लगाकर बोट देने की

अपील की । जिला महामंत्री व

प्रत्याशी के पति और पूर्व अध्यक्ष

प्रतिनिधि मधुसूदन अग्रहरी ने

बताया कि जब हम क्षेत्र में

निकलते हैं तो क्षेत्र के लोग

बताते हैं कि आपके समय में जो

काम हुआ था वही हुआ हैं, नए

अध्यक्ष ने केवल अपना विकास

किया है इसलिए इस बार हम

सभी लोग जात पात से हटकर

दिलीप पाण्डेय उर्फ छोटू सत्य

ने किया । इस दौरान परसान्ता

प्रकाश श्रीवास्तव आदि ने सभा

प्रसाद अग्रहरी, बिंदराम सोनी,

को सम्बोधित कर भाजपा को

जयश्री पासवान, बच्चा राम

बोट देने का अपील किया ।

पासवान, रामचंद्र यादव, प्रेम चंद्र

कार्यक्रम की अध्यक्षता अमरेन्द्र

अग्रहरी, अजय मिश्रा, आशीष

मणि त्रिपाठी, लवकुश ओझा, त्रिपाठी व संचालन रमेश सोनी

निकलते हैं तो क्षेत्र के लोग

बातों का सभी ने समर्थन कर

जय जयकार कर मोदी योगी के

नारे लगाए । कार्यक्रम में नरेंद्र

मिश्रा गोविंद और अन्य

निकाय के नेता जोगी ने किया

गया । इस सम्बन्धी आदेश विधान

परिषद सचिवालय उप्र सदस्यी

अमुमांग द्वारा जारी किया गया है ।

एमएलसी धरूव कुमार त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा व स्वास्थ्य संविधान में वर्षीय मूल भूत अधिकार है । इस सभी के लिए सुलभ होना चाहिए । शिक्षा के व्यवसायीकरण पर अंकुश जरूरी है । इस पर जन शिक्षायत मिलने पर नियमानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी । प्रधानाचार्य गोपेश्वर चौबे, संजय कुमार गुरु, राम उजागिर, पाण्डेय, वीरेंद्र पाण्डेय, अनिल मिश्र, मनोज गोतम, प्रमोद पाण्डेय, रुपेश सिंह, हरिशंकर सिंह, अभय श्रीवास्तव, मनोज शर्मा आदि ने खुशी व्यक्त की है ।

पत्रकार के निधन पर

श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजार, सिद्धार्थनगर ।

सभापति विधान परिषद ने

एमएलसी धरूव कुमार त्रिपाठी

को उप्र विधान परिषद की

प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के

अंतर्गत गठित सदन की शिक्षा

की व्यवसायिककरण सम्बन्धी

जाँच समिति का सभापति



दैनिक बुद्ध का संदेश
उसका बाजार, सिद्धार्थनगर ।

नगर पंचायत

उसका बाजार के

काशी राम नगर में नगर निकाय

चुनाव का

उद्घाटन इटवा

विधायक माता

प्रसाद पाण्डेय ने

किया । नगर

निकाय चुनाव को

ले कर सभी

प्रत्याशी पूरी तरह

से कमर कस ली

है । नगर पंचायत

में प्रवार प्रसाद भी

तेज हो गई है

इटवा विधायक

माता प्रसाद

पाण्डेय ने कहा

कि कर्ता

कार्यकर्ता बहुत ही लगन से लगे

चुनेगी । नगर पंचायत अध्यक्ष

आवास मिला हुआ है और पूरे

राजकमार, आशीष चौसिया आदि

हुए हैं और विश्वास भी है

प्रतिनिधि सुरेश यादव ने कहा

नगर पंचायत में स्ट्रीट लाइट

लोग रहे मौजूद ।

कार्यकर्ता और नगर पंचायत की

जनता एक बार फिर से अध्यक्ष

किए हमारे कार्यकाल में लगभग

गरीब लोगों को तीन हजार में विकास का काम किए हैं

सड़क का निर्माण भी

किया गया है लोगों के

लिए पीने के लिए शुद्ध

पेयजल की व्यवस्था की

गई है ।

इस उद्घाटन में

माता प्रसाद पाण्डेय,

विधायक विजय

पासवान, अजय चौधरी,

तौले सर, निधाद,

मोहम्मद मेरकारी,

जिला पंचायत सदस्य

प्रतिनिधि सुलील यादव,

अनूप यादव, रविंद्र

अग्रहरी, विभूति अग्रहरी,

असकद अग्रहरी, रोहित,

श्याम सुदर, लवकुश

साहनी, अली अहमद,

सोनू यादव, सर्वदेव

यादव, फूलचंद यादव,

रविंद्र यादव, रविंद्र

अग्रहरी, विभूति अग्रहरी,

असकद अग्रहरी, रोहित,

श्याम सुदर, लवकुश

साहनी, अली अहमद,

सोनू यादव, सर्वदेव

यादव, फूलचंद यादव,

रविंद्र यादव, रविंद्र

अग्रहरी, विभूति अग्रहर

सम्पादकीय

हर साल गर्मी में लू से, ठंड में
शीतलहर से और वर्षा ;तु में
बाढ़ से सिर्फ गरीब ही मरता
है। लेकिन अब देखने में
आ रहा है कि वातानुकूलित
वातावरण में रहने वाली
तथा पिज्जा- बर्गर खाने
वाली पीढ़ी ज्यादा मौसमी
बदलावों के प्रभाव की
शिकार हो रही है। विडंबना
यह है कि हमने शरीर की
जीवनी शक्ति कृत्रिम
शक्तिवर्धक पदार्थों व...

पृथ्वी की उत्पत्ति के साथ
ही उद्भूत हुआ सनातन धर्म



हिन्दू धर्म 90 वर्ष पुराना है। हिन्दू धर्म के नबे हजार वर्ष पुराने होने की बात सुनकर आप चौंक रहे होंगे। लेकिन जी हां आपने बिलकुल सही पढ़ा। हिन्दू धर्म की उत्पत्ति सनातन धर्म और संस्कृति की उत्पत्ति के साथ ही अंगीकृत है। सनातन का अभिप्राय शाश्वत या सदैव बना रहने वाला अर्थात् जिसका न आदि है और न अंत ही है। हिन्दू धर्म को भले ही विदेशी इतिहासकार शीघ्र का मानें किंतु हिन्दू धर्म पृथ्वी की उत्पत्ति के साथ ही आविर्भूत हुआ है। सूर्य, चंद्रमा की किरणों के साथ जल के अविरल, निर्मल और शीतल प्रवाह ने लगभग एक लाख वर्ष पूर्व सनातन संस्कृति के उद्भव की इबारत लिख दी थी। सर्वप्रथम इस सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी ने मनुष्य के साथ उसके भरण पोषण के लिए अन्य प्रकार की वस्तुओं का सृजन किया। भगवान विष्णु ने पितृवृत्त स्नेह के साथ इस सृष्टि का पालन पोषण करना प्रारंभ किया और भगवान शंकर अर्थात् श्री महेश जी ने इस सृष्टि पर कृपा और महाविनाश की गाथा को लिखना प्रारंभ किया। सिंधु नदी घाटी की सम्भिता में शिव अर्थात् पशुपति जी को पूजने का पता चलता है। सिंधु नदी घाटी की सम्भिता के लोग आर्य थे और उनका मूल निवास स्थान भारत ही था। इतिहास के प्रमाण जो भी कहें किंतु हमारे साहित्यिक ग्रंथ 9057 ईसा पूर्व स्वायंभुव मनु के प्रकटीकरण की बात करते हैं। प्रमाणिक स्रोतों के अनुमान के मुताबिक 6673 ईसा पूर्व वैवस्वत मनु हुए जबकि भगवान श्री राम 5114 ईसा पूर्व हुए और 3112 ईसा पूर्व श्री कृष्ण का जन्म हुआ। ब्रह्मा, विष्णु और महेश हमारी चेतना के प्रकाश पुंज हैं जिन्होंने समय समय पर भारतीय सांस्कृतिक मनीषा और चिंतन पद्धति को गतिशीलता प्रदान की है। हिन्दी दैनिक समाचार पत्र बुद्ध का संदेश ने महानायक तुलसीदास की सीरीज को प्रकाशित किया। आज से सनातन धर्म की उत्पत्ति और विकास पर लिखूंगा। गोस्वामी तुलसीदास जी और प्रभु श्रीराम मेरे और आपके हृदय में विराजमान हैं। इसलिए बीच बीच में बाबा तुलसीदास पर लिखता रहूंगा।

लेखक विनय कांत मिश्र / दैनिक बुद्ध का सन्देश

जिस रिपोर्ट से अदानी समूह की 10 लाख करोड़ रुपए की पूंजी इब गई, उस रिपोर्ट का कोई बड़ा राजनीतिक मुद्दा नहीं बन पाया ? इसमें संदेह नहीं है कि इस विवाद ने आम लोगों तक यह बात पहुंचाई है कि कोई उद्योगपति है अदानी, जो प्रधानमंत्री का बहुत करीबी है। यह बात अपने आप में प्रधानमंत्री की छवि को नुकसान पहुंचाने के लिए पर्याप्त है। हो सकता है कि लोगों के मन में कोई धारणा ...

અનુભૂતિ વિદેશી

अजीत द्विवदा
राहुल गांधी और कांग्रेस के प्रवक्ताओं को छोड़ दें तो ज्यादातर नेता अदानी मसले पर हुप हो गए हैं। कांग्रेस के बड़े नेता संसद के बजट सत्र में भले संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी बनाने की मांग करते हुए हिंगमा करते रहे और अदानी मसले पर संसद की कार्यवाही ठप्प करते रहे लेकिन उसके बाद वे इस मसले पर बयान देने से बच रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता विपक्ष मलिलकार्जुन खडगे संसद में अदानी विरोध का केंद्र थे लेकिन कर्नाटक के चुनाव प्रचार में उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा है। राहुल गांधी ने भी अपनी एक-दो शुरुआती सभाओं में अदानी को निशाना बनाया लेकिन बाद में वे भी इस पुरानी बात पर लौटे के भाजपा दो-तीन अरबपतियों के लिए काम करती है। कर्नाटक में कांग्रेस को चुनाव लड़वा रहे दोनों बड़े नेता सिद्धरमैया और डीके शिवकुमार अदानी पर कुछ नहीं बोल रहे हैं। प्रियका गांधी वाड्डा ने अपने दो दिन के चुनाव प्रचार में एक बार भी अदानी का नाम नहीं लिया। कांग्रेस के तीन सदस्यमंत्री हैं और

हैं और तीनों इस पर चुप हैं। हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बहुत प्रयास करके ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के साथ चल रहा अदानी समूह का झगड़ा निपटाया, जिसके बाद ट्रांसपोर्टर्स ने अपनी हड्डताल खत्म की थी। राजस्थान में गौतम अदानी ने 50 हजार करोड़ रुपए के निवेश का ऐलान किया है। सो, अदानी समूह पर हमला करना अशोक गहलोत के लिए भी राजनीतिक रूप से मुफीद नहीं होगा। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार ने तमाम विरोध के बावजूद हसदेव जंगल के पेड़ काटने की मंजूरी दी। हसदेव अरण्य में अदानी समूह की कोयले की खदानें हैं, जहां से कोयला निकालने के लिए जंगल काटना जरूरी थी। जंगल को बचाने के लिए देश भर के सामाजिक संगठन और आदिवासी समूह विरोध कर रहे थे लेकिन अंततरु जंगल काटने की मंजूरी दी गई। वहां अदानी समूह के साथ सरकार और कांग्रेस के कई नेताओं के नजदीकी संबंध हैं। सो, तीनों मुख्यमंत्रियों के लिए अदानी पर बोलना मुश्किल है। कमलनाथ मध्य प्रदेश के अध्यक्ष हैं और सर्वाधिक प्रति दावेदार हैं। वे शर्कुर से कॉरपोरेट समर्थक माने जाते हैं इसलिए उनसे उम्मीद नहीं की जा सकती है कि अदानी के खिलाफ बोलेंगे। लेकिन यह सिंह कांग्रेस नेताओं या कांग्रेस के मुख्यमंत्रियों वा दुविधा या मुश्किल नहीं है, बल्कि दूसरे विपक्षी पार्टियां भी एक एक करके अदानी और हिंडनबर्ग रिपोर्ट के मामले से दूर होते जा रही हैं। अगर किसी पार्टी के कुछ नेतृत्व या प्रवक्ता बयान दे भी रहे हैं तो बड़े नेतृत्व खासतौर से मुख्यमंत्री आदि इस पर कुछ नहीं बोल रहे हैं। ममता बनर्जी से लेकर नीतीश कुमार तक अदानी का नाम लेने वाले रहे हैं। एनसीपी प्रमुख शरद पवार एक कदम आगे बढ़ कर अदानी को कली चिट दे दी है। उन्होंने एक इंटरव्यू में अदानी और अंबानी की तुलना टाटा और बिड़ला कर दी और अदानी का बचाव करते हुए कहा कि हिंडनबर्ग की साख के बारे ज्यादा जानकारी नहीं है और ऐसा लग रहा है कि एक औद्योगिक समूह को जान बूझकर निशाना बनाया गया। इसके बाद गौतम अदानी मुंबई में उनसे मिलने उनके घर गए जहां दोनों के बीच दो घंटे तक गोपनीय

मौसम की मार—हरेक परेशान



तमाम तरह की बीमारियों का भी जन्म हो रहा है। दरअसल, बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने तथा मनुष्य की पैसा कमाने की हवस ने हमारे खाद्यात्रों व फल— सब्जियों में इतने रासायनिक पदार्थ भर दिये हैं कि आम आदमी की जीवनी शक्ति लगातार कमजोर होती जा रही है। जिसके चलते हमारा शरीर मौसम की तीव्रता को झेल पाने में सक्षम नहीं हो पाता। दो मौसमों के संधि काल में ज्यादातर लोग फल आदि बीमारियों के शिकार होते रहे हैं। कोरोना संक्रमण भी कमोबेश उन्हीं लक्षणों को दर्शाता है जो मौसम में बदलाव के दौरान आम समय में उभरते रहे हैं। दरअसल, असली खोट हमारी जीवन शैली व खानपान में है। पहले कहा जाता था कि मौसम नहीं बल्कि गरीबी मारती है। हर साल गर्मी में लू से, ठंड में शीतलहर से और वर्षा ऋतु में बाढ़ से सिर्फ गरीब ही मरता है। लेकिन अब देखने में आ रहा है [] में रहने वाली तथा पिज्जा— बर्गर खाने वाली पीढ़ी ज्यादा मौसमी गर हो रही है। विडंबना यह है कि हमने शरीर की जीवनी शक्ति कृत्रिम प्रणिक दवाओं में तलाशनी शुरू कर दी है। हमारे सेहतमंद रहने का सिर्फ है कि हम जितना प्रकृति के करीब रहेंगे, अपने आसपास पैदा होने वाले उपयोग करेंगे, उतना स्वस्थ होंगे। हर शहर व कस्बे की भौगोलिकता व न खाद्यान्न व फलों को खाने की संस्तुति हमारे पूर्वजों ने की। थी, म के बदलाव के दौरान हमारे स्वास्थ्य की रक्षा से जड़ा है।

कि वातानुकूलित वातावरण में रहने वाली तथा पिज्जा— बर्गर खाने वाली पीढ़ी ज्यादा मौसमी बदलावों के प्रभाव की शिकार हो रही है। विडब्बना यह है कि हमने शरीर की जीवनी शक्ति कृत्रिम शक्तिवर्धक पदार्थों व रासायनिक दवाओं में तलाशनी शुरू कर दी है। हमारे सेहतमंद रहने का सिर्फ और सिर्फ एक ही उपाय है कि हम जितना प्रकृति के करीब रहेंगे, अपने आसपास पैदा होने वाले फल, सब्जी व अनाज का उपयोग करेंगे, उतना स्वस्थ होंगे। हर शहर व कस्बे की भौगोलिकता व हवा-पानी के अनुसार जिन खाद्यान्न व फलों को खाने की संस्तुति हमारे पूर्वजों ने की। थी, उसका सीधा सम्बन्ध मौसम के बदलाव के दौरान हमारे स्वास्थ्य की रक्षा से जुड़ा है।

कांग्रेस हिमती और आक्रमक

उधर दो बड़े लिंगायत नेताओं— जगदीश शेट्टर और लक्ष्मण सावदी ने पार्टी छोड़ी है और कांग्रेस की टिकट पर लड़ रहे हैं। इससे भी भाजपा रक्षात्मक हुई है। टिकट बंटवारे में जिस तरह से विवाद हुआ और शेट्टर ने भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष पर आरोप लगाए उससे भी भाजपा बैकफुट पर है। मुख्यमंत्री बोम्बई को कहना पड़ा कि शेट्टर की टिकट काटने का फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय...

हरिशंकर व्यास

कर्नाटक चुनाव की खास बात यह है कि पहली बार भाजपा रक्षात्मक है और कांग्रेस आक्रामक अंदाज में राजनीति कर रही है। देश के किसी भी राज्य में ऐसा देखने को नहीं मिला कि भाजपा अपने तय किए एजेंडे पर राजनीति करने की बजाय कांग्रेस के एजेंडे पर प्रतिक्रिया दे रही हो। कांग्रेस के तेवर कितने आक्रामक हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ थाने में जाकर मुकदमा दर्ज कराया। सोचें, देश के गृह मंत्री के खिलाफ! अब तक चुनावी भाषण को लेकर कांग्रेस चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराती थी और सबको पता होता था कि आयोग क्या करेगा। सो, इस बार कांग्रेस ने चुनाव आयोग से शिकायत करने के साथ ही पुलिस स्टेशन में जाकर एफआईआर दर्ज कराई।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डीके शिवकुमार और राज्य के प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने थाने में रपट लिया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने एक भाषण में कहा था कि कांग्रेस जीतेगी तो कर्नाटक में दंगे होंगे। इस बयान के खिलाफ शिवकुमार और सुरजेवाला ने केस दर्ज कराया है। उन्होंने अपनी एफआईआर

में कहा है अमित शाह का बयान सामुदायिक

सद्भाव बिगड़ने वाला है और भड़काऊ है। इसी तरह राहुल गांधी ने अपनी चुनावी सभा में कहा कि कर्नाटक भाजपा में उसी को टिकट मिली है, जो ₹40 फीसदी कमीशनच पर काम करता है। उन्होंने भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री जगदीश शेष्टार और पूर्व उप मुख्यमंत्री लक्ष्मण सावदी का हवाला देते हुए कहा कि उनको भाजपा की टिकट इसलिए नहीं मिली क्योंकि उन्होंने ₹40 फीसदी कमीशनच पर काम करने से इनकार कर दिया और यह बात भाजपा के शीर्ष नेताओं को पसंद नहीं आई।

इस बार कांग्रेस ने भ्रष्टाचार का एजेंडा सेट किया है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस को भ्रष्ट साबित करने का एजेंडा बनाया था। उन्होंने कहा था कि कर्नाटक कांग्रेस के लिए एटीएम की तरह है। वे पहले भी कह चुके हैं कि कर्नाटक से नकदी ट्रांसफर का सीधा कनेक्शन दिल्ली जुड़ा हुआ है। लेकिन इस बार मामला उलटा है। इस बार कांग्रेस ने ₹40 फीसदी कमीशनच वाली सरकार का हल्ला बनवाया है। राहुल गांधी के साथ साथ प्रियंका गांधी वाड्डा ने भी कांट्रैक्टर एसोसिएशन की ओर से लिखी वित्री का हवाला दिया, जिसमें 40 फीसदी कमीशन मांगे जाने का जिक्र था। एक ठेकेदार की आत्महत्या भी प्रचार का मुद्दा है। कांट्रैक्टर एसोसिएशन से लेकर स्कूल मैनेजमेंट

Digitized by srujanika@gmail.com

बासनगौड़ा ने खडगे के बयान के लिए कांग्रेस पर हमला बोलते हुए उनके संभवतरूप धंधी और र रहे हैं। चुनाव में शविषकन्याच कहा। भाजपा खडगे पर इसलिए हमला नहीं कर पा रही है कि कर्नाटक उनका गृह प्रदेश है और वे दलित हैं।

या था तो भाजपा कई और कारणों से रक्षात्मक है। वह मुख्यमंत्री पद का चेहरा नहीं घोषित कर पा रही है क्योंकि उसे पता है कि सिर्फ लिंगायत वोट से चुनाव नहीं जीता जा सकेगा। बसवराज बोम्मई के सीएम दावेदार नहीं घोषित करने का नतीजा

छात्रों से यह हुआ है कि लिंगायत मतदाताओं में राहुल गांधी और कई कांग्रेस वृह प्रदेश हैं। उनके बैठे को जरूर टिकट मिली है लेकिन सबको पता है कि भाजपा जीत भी जाती है तो वे सीएम नहीं होंगे। उधर दूसरे बड़े लिंगायत नेताओं—जगदीश शेष्ठा और लक्ष्मण सावदी ने पार्टी छोड़ी है और कांग्रेस की टिकट पर लड़ रहे हैं। इससे भी भाजपा रक्षात्मक हुई है। टिकट बंटवारे में जिस तरह से विवाद हुआ और शेष्ठा ने भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष पर आरोप लगाए उससे भी भाजपा बैकपृष्ठ पर है। मुख्यमंत्री बोम्बई को कहना पड़ा कि शेष्ठा की टिकट काटने का फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने किया, संतोष के उससे कोई लेना देना नहीं था।

बोफोर्स नहीं बन रहा अदानी का मुद्दा!

बठक हुई। इस मुलाकात न रही सही कसर पूरी कर दी है। महाराष्ट्र में कांग्रेस की दोनों सहयोगी पार्टियाँ—एनसीपी और शिव सेना के उद्घव ठाकरे गुट को अदानी से दिक्कत नहीं है। गुजरात की प्रदेश कांग्रेस ईकाई को पहले से कोई दिक्कत नहीं है। डीएमके, बीआरएस वगैरह के लिए यह पहले भी कभी मुद्दा नहीं था। असल में हर राज्य में अदानी का कारोबार है, निवेश है और लोगों की नौकरियाँ हैं। इसलिए कोई भी पार्टी उसे निशाना नहीं बनाना चाहती है। तभी सवाल है कि जब कांग्रेस के दूसरे बड़े नेता और विपक्ष के नेता चुप रहेंगे तो राहुल गांधी इस मसले पर आगे क्या करेंगे? क्या वे अकेले अदानी का मुद्दा उठाते रहेंगे? ध्यान रहे अदानी समूह पर आई हिंडनबर्ग की रिपोर्ट विपक्ष के लिए बोफोर्स जैसा मुद्दा थी। इसमें वह सब कुछ था, जिसके आधार पर सरकार को कठघर में खड़ा किया जाए। विपक्ष ने इस मुद्दे पर उसी अंदाज में राजनीति भी की। संसद का पूरा बजट सत्र इस मसले पर जाया हुआ। लेकिन जब चुनावी राजनीति में इस मुद्दे के इस्तेमाल की बात आई है तो यह मुद्दा नहीं चल पाया। कर्नाटक में हो सकता है कि कांग्रेस चुनाव जीत जाए लेकिन उसमें अदानी और हिंडनबर्ग की रिपोर्ट का कोई हाथ नहीं होगा। कर्नाटक सरकार के ऊपर पहले से भ्रष्टाचार के आरोप हैं और राहुल गांधी व प्रियंका गांधी वाड्रा से लेकर कांग्रेस के तमाम नेता उसे 40 फीसदी कमीशन वाली सरकार बता कर प्रचार कर रहे हैं।

लड़ा जाए। अगर उसम राष्ट्रीय मुद्द लाए जाते हैं तो नरेंद्र मोदी का चेहरा आएगा और उनके ऊपर हमला करना होगा, जो कि कांग्रेस के लिए ठीक नहीं होगा। प्रदेश के नेताओं पर हमला करके भाजपा को हराया जा सकता है लेकिन अगर फोकस नरेंद्र मोदी के ऊपर होगा तो भाजपा को नुकसान की बजाय फायदा हो सकता है। हो सकता है कि इस वजह से कर्नाटक चुनाव में अदानी का मुद्दा नहीं बनाया गया हो। लैकिन कर्नाटक के बाहर भी अब यह कोई मुद्दा नहीं है और अगर कांग्रेस कर्नाटक में जीत जाती है तो यह तय मानना चाहिए कि तेलंगाना, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मिजोरम में इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव में भी अदानी का मुद्दा नहीं होगा। फिर उसके बाद इस बात की कितनी संभावना रह जाएगी कि विपक्ष तकनाको विशेषज्ञा का कमटा बनाइ थी और उसने कोई गडबड़ी नहीं पकड़ी। किसान मामले में भी सुप्रीम कोर्ट की विशेषज्ञ कमेटी कैसी थी और उसने क्या किया वह सबने देखा। इसलिए अदानी मसले पर भी विशेषज्ञ कमेटी से कोई खास उम्मीद नहीं की जा सकती है। सवाल है कि ऐसा क्यों हुआ कि जिस रिपोर्ट ने अदानी समूह की बुनियाद हिला दी, जिस रिपोर्ट की वजह से अदानी दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति से 33वें स्थान पर पहुंच गए, जिस रिपोर्ट से अदानी समूह की 10 लाख करोड़ रुपए की पूँजी ढूँढ़ गई, उस रिपोर्ट का कोई बड़ा राजनीतिक मुद्दा नहीं बन पाया? इसमें संदेह नहीं है कि इस विवाद ने आम लोगों तक यह बात पहुंचाई है कि कोई उद्योगपति है अदानी, जो प्रधानमंत्री का बहत करीबी है।

An advertisement for 'बुद्ध प्रबन्धन एकाश्वानी' (Budh Prabandhan Akashvani). The top half features a golden statue of Buddha. Below it, the text 'बुद्ध प्रबन्धन एकाश्वानी' is written in large, bold, yellow and red letters. The background shows various printed products like books, brochures, and a calculator. At the bottom, there is contact information: '8785951917, 8453824459' and 'www.budhprabandhan.com'. There is also a small image of a person's face.



